IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

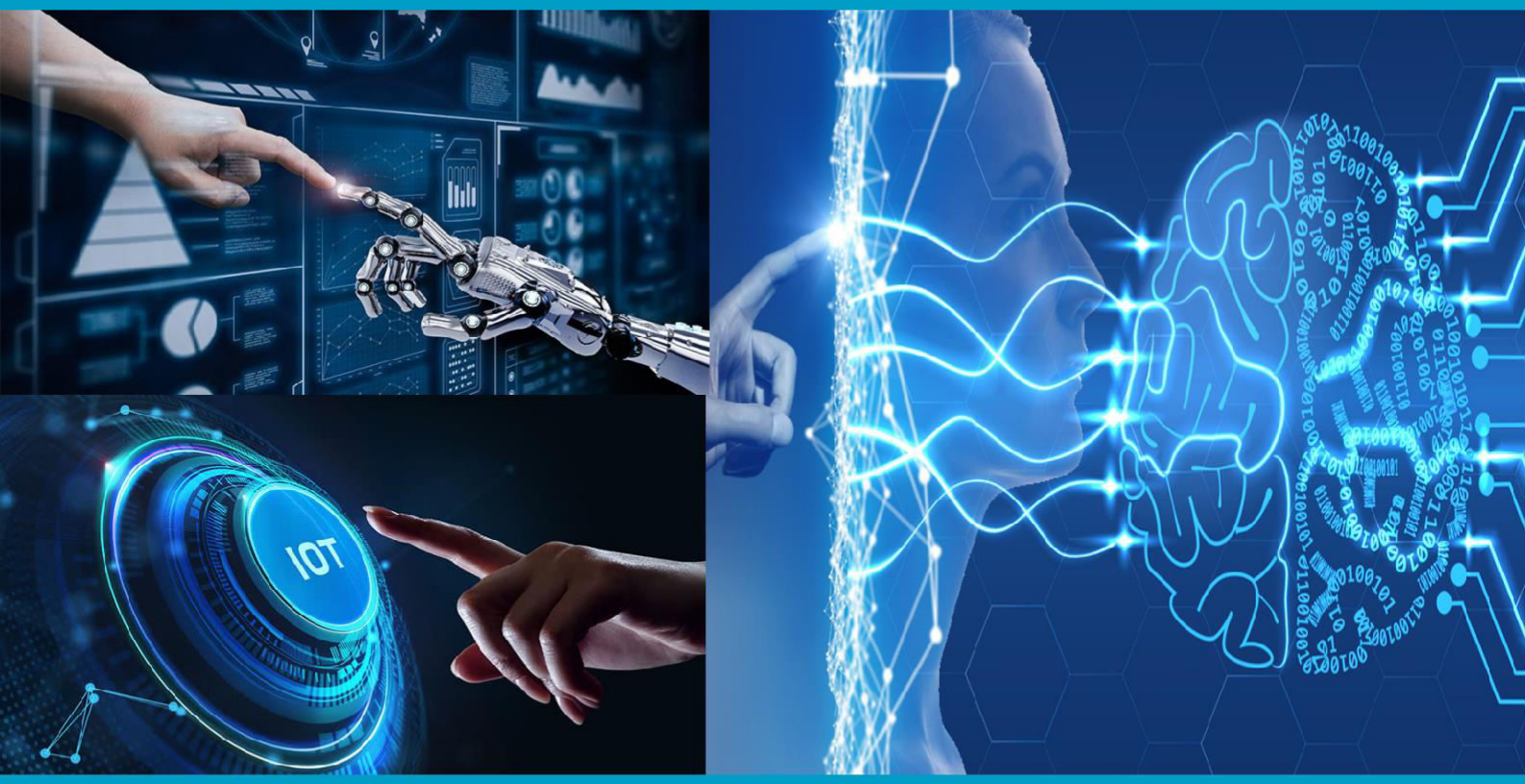

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 11, Issue 6, June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.802

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

झालावाड़ जिले में पर्यटन विकास की सम्भावना

DR. SURENDRA KUMAR SHARMA

ASSISTANT PROFESSOR, GEOGRAPHY (VSY), B.A.J.M. GOVT. COLLEGE, NAINWA, BUNDI, RAJASTHAN, INDIA

सार

झालावाड़ जिले का नाम लेते ही मन मस्तिक में नदियां, बांध, झरने,पहाड़ों की हरीभरी वादियां घने जंगल और धार्मिक स्थलों की तस्वीरें तैरने लगती है। लेकिन यह तस्वीर हाड़ौती व मालव क्षेत्र के बीच ही सीमित है। इससे आगे के लोग झालावाड़ को ख्याती के बारे ेंमें नहीं जानते हैं। स्पष्ट है कि देश दुनिया में जिले का एक उजला पक्ष अनदेखा है, जबकि वास्तविकता यह है कि झालावाड़ में पर्यटन की भरपूर संभावनाएं है। यहां प्राकृतिक सौन्द्रर्य हैं तो घने जंगल और धार्मिक स्थल भी है। कौल्वी में हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित ऐतिहासिक स्थल भी है, तो विश्व विरासत सूची में शामिल जल दुर्ग भी है। जरुरत सिर्फ मजबूत सरकारी इच्छाशक्ति की है, जो इस जिले के लिए कोई ठोस योजना बनाकर पर्यटन मानचित्र पर जगह दिला सके।
वर्तमान स्थित यह है कि देश के पर्यटक तो छोड़िए राजस्थान के सैलानी भी यहां कम ही आते हैं। जबकि यहां पर्यटन को विकसित करने की अपार संभावाएं है।

परिचय

बन सकता है रोप वे-

विश्व प्रसिद्ध गागरोन जल दुर्ग गागरोन को 2013 में विश्व विरासत सूची में शामिल तो कर लिया गया है। लेकिन विभाग व सरकार ने इस दर्ज के हिसाब प्रयास नहीं किए है। यहां सरकारी प्रयास किए जाएं तो रोप वे बनाया जा सकता है। यहां मुकुदंरा हिल्स टाइगर रिजर्व में दो बाघ छोडने से इस क्षेत्र को सवाईमाधोपुर की तर्ज पर विकसित किया जा सकता है। यहां की प्राकृतिक और भौगोलिक संरचना इस स्थान को ख्याती दिलाने में पर्याप्त है। इस दिशा में सही प्रयास हो तो यहां देशी-विदेश सहित हजारों की संख्या में पर्यटकों की आवाजाही हो सकती है।

उपेक्षित हो रही है बौद्धकालीन गुफाएं-

जिले में स्थित चौथी से सातवीं शताब्दी की अदभूत बौद्ध गुफाएं उपेक्षित है। जबकि ये महाराष्ट्र की अजंता-एलोरा की गुफाओं के समकक्ष मानी जाती है। बावजूद इसके सरकारी मशीनरी व राजनेताओं का इनकी ओर कोई ध्यान नहीं है। ये गुफाएं हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित गुफाएं है। यह बौद्ध शिक्षा का केन्द्र रही है। यहां अजंता की तर्ज की द्विमंजिला गुफाए है, इन्हें पर्यटन के लिए बौद्ध सर्किट के रुप में विकसित किया जा सकता है। संसाधन व होटल आदि बनाए जाएं तो यह विकसित हो सकती है।[1,2,3]

उदयपुर से जोड़ा जा सकता है जिले को-

जिले के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटक स्थलों पर काम तो हुए है, लेकिन पर्यटक यहां तक कैसे पहुंचे इस दिशा में सरकारी स्तर पर कोई सार्थक प्रयास नहीं हुए है। जो यहां आने वाले पर्यटकों को जिले के पर्यटन स्थलों के बारे में बता सके। उदयपुर, चितौड़, कोटा, बूंदी तक बड़ी संख्या में पर्यटकों आते हैं। अगर ठीक से योजना बते तो इन पर्यटकों को झालावाड़ जिले के पर्यटन स्थलों की ओर आकर्षित किया जा सकता है। यदि चीन, जापान, म्यांमार आदि में दार्शनिक व आधुनिक एप्रोच से संपर्क हो तो बौद्ध धर्म को मनाने वाले लोग यहां आ सकते हैं। स्थानीय राजनेताओं व जिलाप्रशासन यदि प्रयास करें तो इनकी प्रसिद्धि विदशों में हो सकती है।

बन सकता है पर्यटन सर्किट-

जिले में प्रसिद्ध चन्द्रभागा नदी व तट पर प्रसिद्ध चन्द्रमोलेश्वर मंदिर है। रटलाई में अल्टा मंदिर,उन्हेल में नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, चांदखेड़ी में आदिनाथ जैन मंदिर, छापी बांध के ऊपर दलहनपुर महल, महू के महल, असनावर के निकट रातादेवी मंदिर व टांडी सोहनपुरा के पास पौराणिक छीनहरी-पिनहरी का मंदिर, कायावर्णेश्वर महादेव डग, झालरापाटन में नवलखा दुर्ग, सूर्य मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर, भूतेवर मंदिर, शांतिनाथ का जैन मंदिर, रामकुंड बालाजी मंदिर,कामखेड़ा हनुमान मंदिर सहित कई दर्शनीय व

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

प्राकृतिक स्थल है। जिन्हें कोटा,बूंदी, चितौड़, उदयपुर आदि को जोड़कर पर्यटक सर्किट बनाया जा सकता है। लेकिन इसके लिए सरकार व स्थानीय जन प्रतिनिधियों की इच्छाशक्ति की जरुरत है।

1. प्राचीन सांस्कृतिक स्थलों की विरासत स्थली है झालावाड़-

जिले में एक ओर चन्द्रभागा के शिव मंदिर तो दूसरी ओर वल्लभ संप्रदाय का द्वारकाधीश मंदिर है। यहां कोलवी की गुफाएं, विश्वविरासत सूची में शामिल गागरोन दुर्ग, मीठे महावली की दरगाह जैसे कई मनोरम स्थल जिले में है। इसके बावजूद झालावाड़ जिला पर्यटन के क्षेत्र में उचित स्थान नहीं पा सका है। इनस्थानों तक सड़कें, ठहरने की सुविधा व संसाधन हो तो जिला पर्यटन का केन्द्र बन सकता है।

डॉ. सज्जन पोसवाल, विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग, पीजी महाविद्याल, झालावाड़

2.जिले में पर्यटन की काफी संभावना है। यहां धार्मिक व प्राकृतिक दर्शनीय स्थल काफी सारे हैं। लेकिन उनका इंफ्रास्ट्रक्चर की दिशा में उचित काम नहीं हो रहा है।अब रेल की सुविधा है। लेकिन जिले के स्थलों के हॉर्डिंग्स जयपुर सहित ऑनलाइन साइटों पर उचित प्रचार-प्रसार नहीं हो पा रहा है। पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए पर्यटक गाइड व होटल मालिकों को जोड़कर जिले को पर्यटन सर्किट से जोडऩा चाहिए। कई काम हुए है, लेकिन उनके मुकाम तक नहीं पहुंचाया गया है।

दिनेश सक्सेना, अध्यक्ष पर्यटन विकास समिति,झालावाड़

3. पर्यटन समिति की बैठक हुई है, उसमे ंनिर्णय लिया गया है कि जिले में पर्यटन को विकसित करने के लिए आगामी दिनों में नवम्बर माह में लगने वाले चन्द्रभागा मेले में होटल मालिक व गाइड के साथ बैठक की जाएगी।जिले के पर्यटक स्थलों के प्रचार-प्रसार के लिए ऑनलाइन साइटों से संपर्क किया जा रहा है।[4,5,6]

सिद्धार्थ सिहाग, जिला कलक्टर, झालावाड़।

विचार-विमर्श

झालावाड़

ऐतिहासिक शहर

झालावाड़, जिसे कभी बृजनगर कहा जाता था, अपनी समृद्ध प्राकृतिक संपदा और जीवंत वनस्पतियों और जीवों के लिए जाना जाता है। हालाँकि, राजस्थान के अन्य शहरों के विपरीत, झालावाड़ में एक चट्टानी लेकिन पानी से लदा हरा-भरा परिदृश्य है। लाल खसखस के खेत और संतरे से लदे बाग झालावाड़ में बिखरे हुए हैं, जो इसे एक रंगीन रूप देते हैं। वे देश में खट्टे फलों के उत्पादन में भी प्रमुख योगदान देते हैं। इस जगह की सांस्कृतिक विरासत विविध है जिसमें राजपूत और मुगल काल के कई किले और महल शामिल हैं। यह बड़ी संख्या में मंदिरों और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। झालावाड़ का नाम इसके झाला शासकों के नाम पर रखा गया था। झाला जालिम सिंह कोटा राज्य के दीवान थे और उन्होंने शहर को एक छावनी के रूप में स्थापित किया था, जिसे तब मौजूदा झालरापाटन किले के पास छावनी उम्मेदपुरा के नाम से जाना जाता था। उस समय, यह बस्ती घने जंगलों से घिरी हुई थी, जहाँ कई विदेशी प्रजातियाँ रहती थीं। दीवान अक्सर यहाँ शिकार करने आते थे और उन्हें यह जगह इतनी पसंद आई कि उन्होंने इसे एक बस्ती में बदलने का फैसला किया। बाद में जब मराठा आक्रमणकारी हाड़ौती राज्यों पर कब्जा करने के लिए शहर से गुजरे तो इसे सैन्य छावनी में बदल दिया गया।

झालावाड़ में घूमने और तलाशने के लिए आकर्षण और स्थान

गढ़ पैलेस (झालावाड़ किला)

शहर के केंद्र में स्थित, झालावाड़ किला या गढ़ पैलेस एक खूबसूरत स्मारक है। इसे महाराज राणा मदन सिंह और उनके उत्तराधिकारियों ने 1838-1854 ई. के बीच बनवाया था। बाद में कमरों के अंदर खूबसूरत पेंटिंग्स जोड़ी गईं। दीवारों और शीशों पर कुछ बेहतरीन भित्तिचित्र कला के बेहतरीन उदाहरण हैं।

सरकारी संग्रहालय

झालावाड़ सरकारी संग्रहालय राजस्थान के सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक है, जिसकी स्थापना 1915 ई. में हुई थी और इसमें दुर्लभ चित्रों, पांडुलिपियों और मूर्तियों का बेहतरीन संग्रह है। यह संग्रहालय शहर के बीचों-बीच स्थित है और गढ़ पैलेस का एक हिस्सा भी है। यह खूबसूरत इमारत एक बेहतरीन पर्यटक आकर्षण है। यहाँ 5वीं और 7वीं शताब्दी के शिलालेख भी देखे जा सकते हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

भवानी नाट्यशाला

भवानी नाट्यशाला भारत के सबसे अनोखे थिएटरों में से एक है, जिसका निर्माण 1921 ई. में महाराजा भवानी सिंह ने करवाया था। यह वास्तुशिल्पीय आश्चर्य थिएटर और कला की दुनिया में एक बेहतरीन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और इसमें एक भूमिगत मार्ग है, जिसके माध्यम से घोड़े और रथ मंच पर आ सकते थे। इस थिएटर में कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम से लेकर शेक्सपियर के क्लासिक्स तक कई बेहतरीन नाटकों का मंचन हुआ है।

गागरोन किला

गागरोन किला पहाड़ी और जल किले का एक बेहतरीन उदाहरण है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल राजस्थान के छह पहाड़ी किलों में से एक है। तीन तरफ से आहू और काली सिंध नदियों के शांत जल से घिरा यह किला वाकई देखने लायक है। किले के पास ही सूफी संत मीठेशाह का एक खूबसूरत मकबरा है, जहां मोहर्रम के महीने में हर साल रंगारंग मेला लगता है। संत पीपा का मठ भी दिलचस्प [7,8,9]है, जो संत कबीर के समकालीन और संत रामानंद के शिष्य थे। प्रवेश: भारतीय 50/- रुपये, विदेशी 100/- सुबह 9 बजे खुलता है।

परिणाम

चंद्रभागा मंदिर

शानदार चंद्रभागा नदी के तट पर कई खूबसूरत मंदिर हैं जिनमें जटिल नक्काशीदार खंभे और मेहराबदार प्रवेश द्वार हैं। चंद्रमौलेश्वर मंदिर, लकुलीश, हरिहर और देवी मंदिर इस मंदिर परिसर का हिस्सा हैं।

सूर्य मंदिर

झालरापाटन का सबसे बेहतरीन मंदिर 97 फुट ऊंचा, 10वीं शताब्दी का भगवान विष्णु को समर्पित मंदिर है। यह पद्मनाभ या सूर्य मंदिर के नाम से लोकप्रिय है। मंदिर के शीर्ष पर एक बेहतरीन नक्काशीदार शिखर है। यह ऊंची मीनार छोटी-छोटी मीनारों का मिश्रण है जो मुख्य मीनार से चिपकी हुई प्रतीत होती हैं, जो इसे अपने आप में अनूठा बनाती हैं। शिखर परतों में बनाया गया है और सात मंजिला स्तंभ प्रारूप के अनुसार, ऊंचाई बढ़ने के साथ स्तंभों का आकार घटता जाता है। शिखर का आधार मुख्य नींव के चारों ओर एक दूसरे के करीब बड़े स्तंभों से बना है। इस मंदिर का पहली बार 16वीं शताब्दी में और बाद में 19वीं शताब्दी में जीर्णोद्धार किया गया था। प्रवेश द्वार पर स्तंभों और मेहराबों पर देवी-देवताओं और अन्य हिंदू रूपांकनों की छवियों की समृद्ध नक्काशी की गई है

हर्बल गार्डन

हर्बल गार्डन द्वारकाधीश मंदिर के नजदीक स्थित है और इसमें विभिन्न प्रकार के हर्बल और औषधीय पौधे हैं जैसे वरुण, लक्ष्मण, शतावरी, स्टीविया, रुद्राक्ष सिंदूर आदि। गार्डन का रखरखाव वन विभाग द्वारा किया जाता है।

द्वारकाधीश मंदिर

इस मंदिर का निर्माण कोटा राज्य के दीवान (फौजदार) झाला जालिम सिंह ने 1796 ई. में गोमती सागर झील के तट पर करवाया था। 1806 ई. में यहां भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापित की गई थी।

चांदखेड़ी आदिनाथ जैन मंदिर, खानपुर

प्रथम जैन तीर्थंकर (फोर्ड निर्माता), आदिनाथ को समर्पित मंदिर में जाकर 17वीं शताब्दी की वास्तुकला की भव्यता और धार्मिक पवित्रता का अनुभव करें। यह खानपुर के पास चांदखेड़ी में स्थित है और इसमें भगवान आदिनाथ[10,11,12] की छह फीट ऊंची बैठी हुई मुद्रा में प्रतिमा है। यहाँ पारंपरिक भोजन के साथ-साथ मंदिर क्षेत्र में उचित और उचित आवास विकल्प आसानी से उपलब्ध हैं।

दलहनपुर

दलहनपुर छपी नदी के किनारे पर स्थित है, जो एक सिंचाई बांध के करीब है। घने हरे जंगल इस प्राचीन स्थान को और भी आकर्षक बनाते हैं, जिसमें 2 किलोमीटर के क्षेत्र में फैले मंदिर के खंडहरों में सुंदर नक्काशीदार खंभे, तोरण और कुछ कामुक आकृतियाँ हैं।

नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, उनकोल

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

भगवान पार्श्वनाथ की एक हजार साल पुरानी प्रतिमा वाले इस जैन तीर्थस्थल पर अवश्य जाना चाहिए। यह तीर्थस्थल जैनियों के लिए बहुत ही धार्मिक महत्व रखता है। यहाँ जैनियों के व्यंजनों का आनंद लें और मंदिर क्षेत्र में उचित मूल्य पर अच्छे आवास विकल्पों का आनंद लें।

बौद्ध गुफाएं और स्तूप

कोलवी गांव में स्थित बौद्ध गुफाएँ झालावाड़ के सबसे बड़े आकर्षणों में से हैं। बुद्ध की एक विशाल आकृति और नक्काशीदार स्तूप गुफाओं में सबसे प्रभावशाली संरचनाएँ हैं। झालावाड़ से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, ये भारतीय कला के बेहतरीन जीवित उदाहरण हैं। पर्यटक विनायक और हतियागौर के आस-पास के गाँवों का भी पता लगा सकते हैं जो अपनी शानदार गुफाओं के लिए भी जाने जाते हैं। शायद राजस्थान में बौद्ध गुफाओं का एकमात्र चट्टान से काटा गया और सबसे बड़ा समूह।

संत पीपाजी पैनोरमा

गागरोन के राजा से संत बने राजर्षि पीपाजी की ऐतिहासिक और आध्यात्मिक कहानियों की प्रस्तुति इस चित्रमाला में देखी जा सकती है।

शांतिनाथ जैन मंदिर

सूर्य मंदिर के पास ही मंदिर वास्तुकला का एक और उत्कृष्ट उदाहरण शांतिनाथ जैन मंदिर स्थित है। जैन तीर्थंकर शांतिनाथ को समर्पित यह 92 फीट ऊंचा मंदिर 11वीं शताब्दी का है।

नौलखा किला

इस किले का निर्माण 1860 ई. में झालावाड़ के शासक पृथ्वी सिंह ने करवाया था। कहा जाता है कि यह किला इस काल में राजस्थान में बने आखिरी किलों में से एक है।

झालावाड़ ([dʒʰaːlaːʋaːɽ] ⓘ)भारतीयराज्यराजस्थानकेझालावाड़ जिलेशहर,नगरपालिकाऔर मुख्यालय। यह राज्य के दक्षिणपूर्वी भाग में स्थित है। यह झालावाड़ की पूर्वरियासत, और प्रशासनिक झालावाड़ जिला है। इसका जिला मुख्यालय झालावाड़ है। यह जिला राजस्थान का 22वां सबसे बड़ा जिला है। इस जिले को राजस्थान का चेरापूंजी, राजस्थान का नागपुर, राजस्थान का बृजनगर आदि उपनामों से जाना जाता है। राजस्थान का चेरापूंजी इसलिए क्योंकि पूरे राजस्थान में सबसे ज्यादा बारिश इसी जिले के मनोहरथाना कस्बे में होती है। झालावाड़ से कुछ दूरी पर कालीसिंध और आहू नदी के संगम पर गागरोन किला स्थित है जो राजस्थान के जलदुर्ग में से एक है और यह ऐसा किला है जो बिना नींव के खड़ा किला है। इस किले को 2013 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था।[4]

इतिहास[13,14,15]

झालावाड़ शहर की स्थापना एक राजपूत झाला जालिम सिंह [5] ने की थी , जो उस समय कोटा राज्य के दीवान थे (1791 ई.)। उन्होंने इस बस्ती की स्थापना की, जिसे उस समय छावनी उम्मेदपुरा के नाम से जाना जाता था, जो एक छावनी थी। उस समय यह बस्ती घने जंगलों और वन्यजीवों से घिरी हुई थी।

झाला जालिम सिंह अक्सर शिकार के लिए यहाँ आते थे और उन्हें यह जगह इतनी पसंद आई कि वे इसे एक बस्ती के रूप में विकसित करना चाहते थे। इस जगह को सैन्य छावनी के रूप में विकसित करने का उद्देश्य यह था कि मराठा आक्रमणकारी हाड़ौती राज्यों पर कब्ज़ा करने के लिए मालवा से कोटा की ओर इस केंद्रीय स्थान से गुज़रे थे। [

झाला जालिम सिंह ने इस जगह के महत्व को पहचाना और इसे एक सैन्य छावनी और टाउनशिप के रूप में विकसित करना शुरू कर दिया, ताकि वह इस जगह का उपयोग मराठा आक्रमणकारियों पर हमला करने और उन्हें कोटा राज्य तक पहुँचने से पहले रोकने के लिए कर सके। चौनी उम्मेदपुरा को 1803-04 ई. के आसपास एक छावनी और टाउनशिप के रूप में विकसित किया गया था। दिसंबर 1821 में इस क्षेत्र का दौरा करने वाले कर्नल टॉड ने इस क्षेत्र को झाला जालिम सिंह द्वारा स्थापित छावनी के साथ-साथ बड़े घरों, हवेलियों और आसपास की दीवारों के साथ एक अच्छी तरह से स्थापित टाउनशिप के रूप में वर्णित किया।

1838 ई. में अंग्रेज शासकों ने झालावाड़ राज्य को कोटा राज्य से अलग करके झाला जालिम सिंह के पोते झाला मदन सिंह को दे दिया। उन्होंने झालावाड़ राज्य के विकास के लिए अपनी प्रशासनिक सेवाओं का विकास किया। वे लंबे समय तक झालारा पाटन में रहे और गढ़ पैलेस (1840 - 1845 ई.) का निर्माण शुरू किया। वे झालावाड़ राज्य के पहले शासक थे और उन्होंने झालावाड़ के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। झाला मदन सिंह ने 1838 से 1845 तक झालावाड़ पर शासन किया। उनकी मृत्यु के बाद झाला पृथ्वी सिंह झालावाड़ के शासक बने और उन्होंने लगभग 30 वर्षों तक शासन किया।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

1883 में झालावाड़ में एक नगरपालिका की स्थापना की गई। [6]

1899 से 1929 ई. तक झालावाड़ राज्य पर शासन करने वाले राणा भवानी सिंह ने झालावाड़ राज्य के विकास में उल्लेखनीय कार्य किया। सामाजिक गतिविधियों, सार्वजनिक कार्यों (निर्माण), शिक्षा और प्रशासन के क्षेत्र में उनकी सक्रिय भागीदारी थी।

झालावाड़ का मुख्य शहर, जिसे पाटन या झालारा पाटन के नाम से भी जाना जाता है, इसी नाम की रियासत के लिए व्यापार का केंद्र था , जिसके मुख्य निर्यात अफीम, तिलहन और कपास थे। महल शहर से चार मील (6 किमी) उत्तर में है। शहर के पास एक विशाल खंडहर चंद्रावती के प्राचीन शहर का स्थल है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे औरंगज़ेब के शासनकाल में नष्ट कर दिया गया था। इसके अवशेषों की सबसे अच्छी विशेषता सीतलेश्वर महादेव (लगभग 600) का मंदिर है। [7]

झालावाड़ रियासत

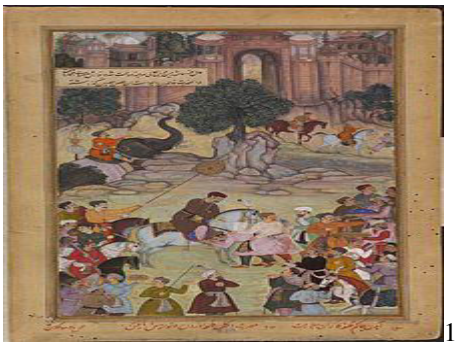

1561 - गगरौन किले के गवर्नर ने अकबर को चाबियाँ सौंपी।

झालावाड़ का भूतपूर्व शासक परिवार राजपूतों के झाला परिवार से संबंधित था। कोटा में मधु सिंह नामक झाला राजपूत[16,17,18] महाराजा का प्रिय बन गया और उसने उससे एक महत्वपूर्ण पद प्राप्त किया, जो वंशानुगत हो गया। कोटा के एक राजा की मृत्यु (1771) पर, राज्य मधु सिंह के वंशज झाला जालिम सिंह के जिम्मे छोड़ दिया गया। [7]

उस समय से जालिम सिंह कोटा के वास्तविक शासक थे। उनके प्रशासन के तहत, जो पैंतालीस वर्षों से अधिक समय तक चला, कोटा क्षेत्र का सभी दलों द्वारा सम्मान किया जाता था। 1838 ई. में, ब्रिटिश हस्तक्षेप और आंतरिक राजनीति के परिणामस्वरूप कोटा राज्य को विघटित करने और झाला जालिम सिंह के वंशजों के लिए एक अलग प्रावधान के रूप में झालावाड़ की नई रियासत बनाने का निर्णय लिया गया। कोटा से अलग किए गए जिलों को कोटा की आय का एक-तिहाई (£120,000) का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जाता था; संधि द्वारा उन्होंने अंग्रेजों की सर्वोच्चता को स्वीकार किया , और £8,000 का वार्षिक कर देने पर सहमत हुए। मदन सिंह को महाराजा राणा की उपाधि मिली, और उन्हें राजपूताना के अन्य प्रमुखों के समान दर्जा दिया गया । [7]

भूगोल

झालावाड़ 24.6°N 76.15°E पर स्थित है । [8] इसकी औसत ऊंचाई 312 मीटर (1023 फीट) है।

जलवायु

इस क्षेत्र की जलवायु भारत-गंगा के मैदान के समान है, जिसे कोपेन प्रणाली द्वारा मानसून-प्रभावित आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु (Cwa) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। गर्मियों में तापमान आम तौर पर 40 °C (104 °F) के आसपास रहता है और अधिकतम 45 °C (113 °F) से अधिक हो सकता है। सर्दियों में सबसे ठंडा तापमान 1 °C (34 °F) तक पहुँच सकता है। झालावाड़ जिले में राजस्थान राज्य में सबसे अधिक वर्षा होती है। औसतन 37 इंच (940 मिमी) वर्षा इसे ठंडा रखती है और हल्की हवाएँ उमस भरी नमी को दूर रखती हैं। [9]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

छिपानाझालावाड़ के लिए जलवायु डेटा (1981–2010, चरम 1929–2012)

महीना	जनवरी	फ़रवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवंबर	दिसम्बर	वर्ष
रिकॉर्ड उच्चतम °C (°F)	33.7 (92.7)	38.6 (101.5)	43.6 (110.5)	46.4 (115.5)	49.3 (120.7)	47.6 (117.7)	44.4 (111.9)	40.2 (104.4)	39.4 (102.9)	40.0 (104.0)	38.0 (100.4)	33.6 (92.5)	49.3 (120.7)
औसत दैनिक अधिकतम °C (°F)	22.9 (73.2)	27.0 (80.6)	32.8 (91.0)	38.9 (102.0)	42.5 (108.5)	39.4 (102.9)	32.7 (90.9)	30.4 (86.7)	32.0 (89.6)	33.1 (91.6)	29.1 (84.4)	24.2 (75.6)	32.1 (89.8)
औसत दैनिक न्यूनतम °C (°F)	9.2 (48.6)	11.9 (53.4)	17.3 (63.1)	22.2 (72.0)	27.1 (80.8)	27.1 (80.8)	24.9 (76.8)	23.8 (74.8)	23.0 (73.4)	18.8 (65.8)	14.2 (57.6)	9.8 (49.6)	19.1 (66.4)
रिकॉर्ड न्यूनतम °C (°F)	−0.6 (30.9)	1.7 (35.1)	5.0 (41.0)	12.6 (54.7)	18.4 (65.1)	17.5 (63.5)	18.6 (65.5)	17.0 (62.6)	14.2 (57.6)	10.0 (50.0)	5.4 (41.7)	1.2 (34.2)	−0.6 (30.9)
औसत वर्षा मिमी (इंच में)	2.8 (0.11)	1.4 (0.06)	1.3 (0.05)	0.8 (0.03)	7.4 (0.29)	93.6 (3.69)	316.0 (12.44)	353.4 (13.91)	127.3 (5.01)	25.7 (1.01)	9.4 (0.37)	2.2 (0.09)	941.3 (37.06)
औसत बरसात के दिन	0.3	0.2	0.2	0.1	0.6	4.5	10.1	11.7	6.0	1.1	0.7	0.3	35.8
औसत सापेक्ष आर्द्रता (%) (17:30 IST पर)	41	33	24	21	22	39	63	75	61	42	38	42	43

स्रोत: भारत मौसम विज्ञान विभाग [10] [11]

जनसांख्यिकी

2011 की भारतीय जनगणना के अनुसार , झालावाड़ की कुल जनसंख्या 66,919 थी, जिसमें 34,765 पुरुष और 32,154 महिलाएँ थीं। 0 से 6 वर्ष की आयु वर्ग की जनसंख्या 8,919 थी। झालावाड़ में साक्षर लोगों की कुल संख्या 48,145 थी, जो कुल जनसंख्या का 71.95% थी, जिसमें पुरुष साक्षरता 77.9% और महिला साक्षरता 65.5% थी। बहराइच की 7+ आबादी की प्रभावी साक्षरता दर 83.0% थी, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 90.1% और महिला साक्षरता दर 75.4% थी। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की आबादी क्रमशः 11,422 और 3,534 थी। 2011 में झालावाड़ में 13595 घर थे। [3]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

शिक्षा

झालावाड़ जिले में शिक्षा का बुनियादी ढांचा काफी विकसित है। [12] प्राथमिक शिक्षा विभाग और माध्यमिक शिक्षा विभाग प्राथमिक विद्यालयों, मध्य विद्यालयों, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के माध्यम से अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं। राजस्थान सरकार द्वारा संचालित राजीव गांधी पाठशाला (स्कूल) योजना भी प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए जिले में चल रही है। राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, झालावाड़ एक उल्लेखनीय संस्थान है।

खेल

झालावाड़ जिले में राजकीय खेल संकुल नामक एक बहु-खेल स्टेडियम है । [13]

उल्लेखनीय स्थान

- गागरोन किला [14]
- कालीसिंध बांध
- कालीसिंध थर्मल पावर स्टेशन
- कोलवी गुफाएं

मंदिर

शांतिनाथ जैन मंदिर

- सूर्य मंदिर, झालरापाटन : 11वीं/12वीं शताब्दी का झालरापाटन का सूर्य मंदिर शहर के मध्य में स्थित है। मंदिर अक्षुण्ण है और गर्भगृह, बरामदा, प्रार्थना कक्ष और प्रवेश द्वार में विभाजित है। मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा इसका बड़ा शिखर है। मंदिर देवी-देवताओं की कई मूर्तियों से सुशोभित है, और प्रार्थना कक्ष के स्तंभों के अंदर और बाहर दोनों तरफ पुष्प डिजाइन उकेरे गए हैं और मूर्तियों से सजाए गए हैं। मंदिर के तीन तरफ प्रवेश द्वार हैं और हर प्रवेश द्वार पर तोरण है । गर्भगृह सादा और सरल है। गर्भगृह की बाहरी दीवारों पर दिक्पाल सूर्य, सुर-सुंदरियों की प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। गणेश और अन्य लघु दृश्य लोगों के जीवन से संबंधित हैं। वर्तमान में, 19वीं शताब्दी के भगवान पद्मनाभ की मूर्ति पूजा के अधीन है और उसे गर्भगृह में रखा गया है। 19वीं शताब्दी में प्रार्थना कक्ष की छत की मरम्मत की गई और राजपूत स्थापत्य शैली में कुछ स्मारक बनाए गए। छत पर संतों और बंदरों की प्रतिमाएँ भी स्थापित की गईं।
- चांदखेड़ी जैन मंदिर, खानपुर: चांदखेड़ी 17वीं शताब्दी का जैन मंदिर है जिसका निर्माण भट्टारक जगतकीर्तिजी ने करवाया था। यह मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए जाना जाता है। यह मंदिर आदिनाथ (ऋषभनाथ) को समर्पित है और मंदिर का मूलनायक लाल पत्थर से बनी पद्मासन मुद्रा में आदिनाथ की 6.25 फीट की मूर्ति है। कहा जाता है कि यह मूर्ति 1500 साल से भी ज़्यादा पुरानी है। [15] ऐसा कहा जाता है कि यहाँ भगवान चंद्र प्रभु की रत्नजड़ित मूर्ति है, लेकिन अब इसे एक दीवार से बंद कर दिया गया है। [16] मंदिर में भोजनालय के साथ-साथ सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एक धर्मशाला भी है । [17]
- श्री 1008 शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, झालरापाटन : शांतिनाथ जैन मंदिर 11वीं शताब्दी में बनाया गया था। मंदिर में बेहतरीन नक्काशी और मूर्तियां हैं। [18] [19] जैन मंदिर मुख्य मंदिर के प्रवेश बिंदु पर दो सफेद हाथियों से सजाया गया है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

- कामखेड़ा बालाजी मंदिर, मनोहरथाना : कामखेड़ा बालाजी मंदिर, मनोहरथाना एक बहुत प्रसिद्ध हनुमान जी महाराज मंदिर है जहाँ राजस्थान, मध्य प्रदेश और कई अन्य राज्यों से साल भर बहुत से भक्त आते हैं। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ सच्चे मन से की गई हर मुराद पूरी होती है। हाल ही में बालाजी धाम के सामने राम मंदिर भी बनाया गया है और इसे जनता के लिए खोल दिया गया है।

परिवहन

वायु

अनुसूचित वाणिज्यिक उड़ान वाला निकटतम हवाई अड्डा कोटा है । कोटा हवाई अड्डा जयपुर और नई दिल्ली के लिए सप्ताह में छह दिन (रविवार को नहीं) एक उड़ान संचालित करता है। यह झालावाड़ शहर से 82 किमी दूर है।[16,17,18]

अनुसूचित वाणिज्यिक उड़ानों वाला वैकल्पिक हवाई अड्डा भोपाल में राजा भोज हवाई अड्डा और मध्य प्रदेश में इंदौर में देवी अहिल्या बाई होल्कर हवाई अड्डा है। कोलाना हवाई अड्डा झालावाड़ के पास स्थित है। इसका उपयोग चार्टर्ड विमानों द्वारा किया जाता है।

निष्कर्ष

रेल

झालावाड़ में एक नया रेलवे स्टेशन बना है । रेलवे स्टेशन झालावाड़ से दो किमी (1.2 मील) दूर है। वर्तमान में, कोटा के लिए सुविधाजनक समय पर प्रतिदिन तीन ट्रेनें चलती हैं। रविवार, बुधवार, गुरुवार को जयपुर और गंगानगर के लिए भी एक ट्रेन चलती है [20]

सड़क

झालावाड़ शहर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 पर स्थित है । कई सरकारी बसें जिले से होकर और बाहर जाती हैं। अंतरराज्यीय और अंतरराज्यीय यात्रा के लिए निजी बसें भी उपलब्ध हैं।

थर्मल पावर स्टेशन

कालीसिंध थर्मल पावर स्टेशन झालावाड़ शहर से 12 किलोमीटर (7 मील) दूर है। पावर प्लांट का संचालन राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम द्वारा किया जाता है । [21] [22] इसकी चिमनी 275 मीटर (902 फीट) ऊँची है। सुविधा के दो कूलिंग टावर 202 मीटर (663 फीट) ऊँचे हैं, जो दुनिया में सबसे ऊँचे हैं। परियोजना के लिए ईपीसी ठेकेदार बीजीआर एनर्जी सिस्टम्स लिमिटेड है। [[23]

उल्लेखनीय लोग

- ओम पुरी [24]
- वसुंधरा राजे
- मोहन लाल सुखारिया[19,20]
- दुष्यंत सिंह

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 6, June 2024 |

- अन्नू कपूर

संदर्भ

1. "झालावाड़ का इतिहास" . 9 जून 2023.
2. ^ "झालावाड़ नगर परिषद" . 9 जून 2023 को पुनःप्राप्त .
3. "भारत की जनगणना: झालावाड़" . Censusindia.gov.in । 22 दिसंबर 2019 को लिया गया ।
4. ↑ झालावाड़-राजस्थान. "इतिहास" । jhalawar.rajasthan.gov.in . 16 सितंबर 2017 को लिया गया ।
5. ^ शास्त्री, आर.पी. (1971). " झाला जालिम सिंह (1730-1823)" । झाला जालिम सिंह , कोटा के वास्तविक शासक: जिन्होंने बूंदी और उदयपुर पर भी अपना आधिपत्य जमाया - चतुर राजनीतिज्ञ, प्रशासक और सुधारक । राज प्रिंटिंग वर्क्स, 1971 में मुद्रित।
6. ↑ रीमा हूजा (2006). राजस्थान का इतिहास . रूपा. पृ. 1166. आईएसबीएन 9788129108906.
7. ^ पूर्ववर्ती वाक्यों में से एक या अधिक में अब सार्वजनिक डोमेन में एक प्रकाशन से पाठ शामिल है : चिशोल्म, ह्यूग , एड. (1911). " झालावाड़ ". एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । खंड 15 (11वां संस्करण)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी. 412.
8. ^ "झालावाड़, भारत के लिए मानचित्र, मौसम और हवाई अड्डे" . fallingrain.com .
9. ^ "राजस्थान - वर्षा" । से संग्रहित है असली 26 नवंबर 2016 को । पुनः प्राप्त किया 9 दिसंबर 2016 .
10. ^ "स्टेशन: झालावाड़ जलवायु तालिका 1981–2010" (पीडीएफ) । जलवायु सामान्य 1981–2010 । भारत मौसम विज्ञान विभाग। जनवरी 2015. पीपी. 365–366. मूल (पीडीएफ) से 5 फरवरी 2020 को संग्रहीत । 20 जनवरी 2021 को लिया गया ।
11. ^ "भारतीय स्टेशनों के लिए तापमान और वर्षा की चरम सीमा (2012 तक)" (पीडीएफ) । भारत मौसम विज्ञान विभाग। दिसंबर 2016. पी. एम182. मूल (पीडीएफ) से 5 फरवरी 2020 को संग्रहीत । 20 जनवरी 2021 को लिया गया ।
12. ↑ राजस्थान का जिला, झालावाड़। "झालावाड़ जिला शिक्षा" । मूल से 4 मार्च 2012 को पुरालेखित । 24 मार्च 2012 को पुनःप्राप्त ।
13. ^ "विजयाराजे खेल संकुल झालावाड़ | खेलो इंडिया" । web.kheloindia.gov.in . 18 जनवरी 2023 को लिया गया ।
14. ^ "झालावाड़ पर्यटन: झालावाड़ में पर्यटन स्थल - राजस्थान पर्यटन" . tourism.rajasthan.gov.in । 16 सितंबर 2017 को लिया गया ।
15. ^ "श्री आदिनाथ दिग. जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी - जैन तीर्थ.कॉम" .
16. ^ "चांदखेड़ी जैन मंदिर" । जैन विश्वकोश । 2 मई 2017 को मूल से संग्रहीत । 23 फरवरी 2019 को लिया गया ।
17. ^ "झालावाड़ में पर्यटन, झालावाड़ में सर्वश्रेष्ठ स्थान" । TourismGuideIndia.com । मूल से 29 जून 2018 को संग्रहीत । 23 फरवरी 2019 को लिया गया ।
18. ^ "पर्यटक स्थल" . jhalawar.rajasthan.gov.in । 23 फरवरी 2019 को लिया गया ।
19. ^ "झालावाड़ पर्यटन: झालावाड़ में पर्यटन स्थल" . tourism.rajasthan.gov.in । 23 फरवरी 2019 को लिया गया ।
20. ^ "कोटा - झालावाड़ सिटी पैसेंजर (अनारक्षित) / 59838 समय सारणी / अनुसूची: कोटा से झालावाड़ डब्ल्यूसीआर / पश्चिम मध्य क्षेत्र - रेलवे पूछताछ" . indiarailinfo.com । पुनः प्राप्त किया 17 नवंबर 2018 .

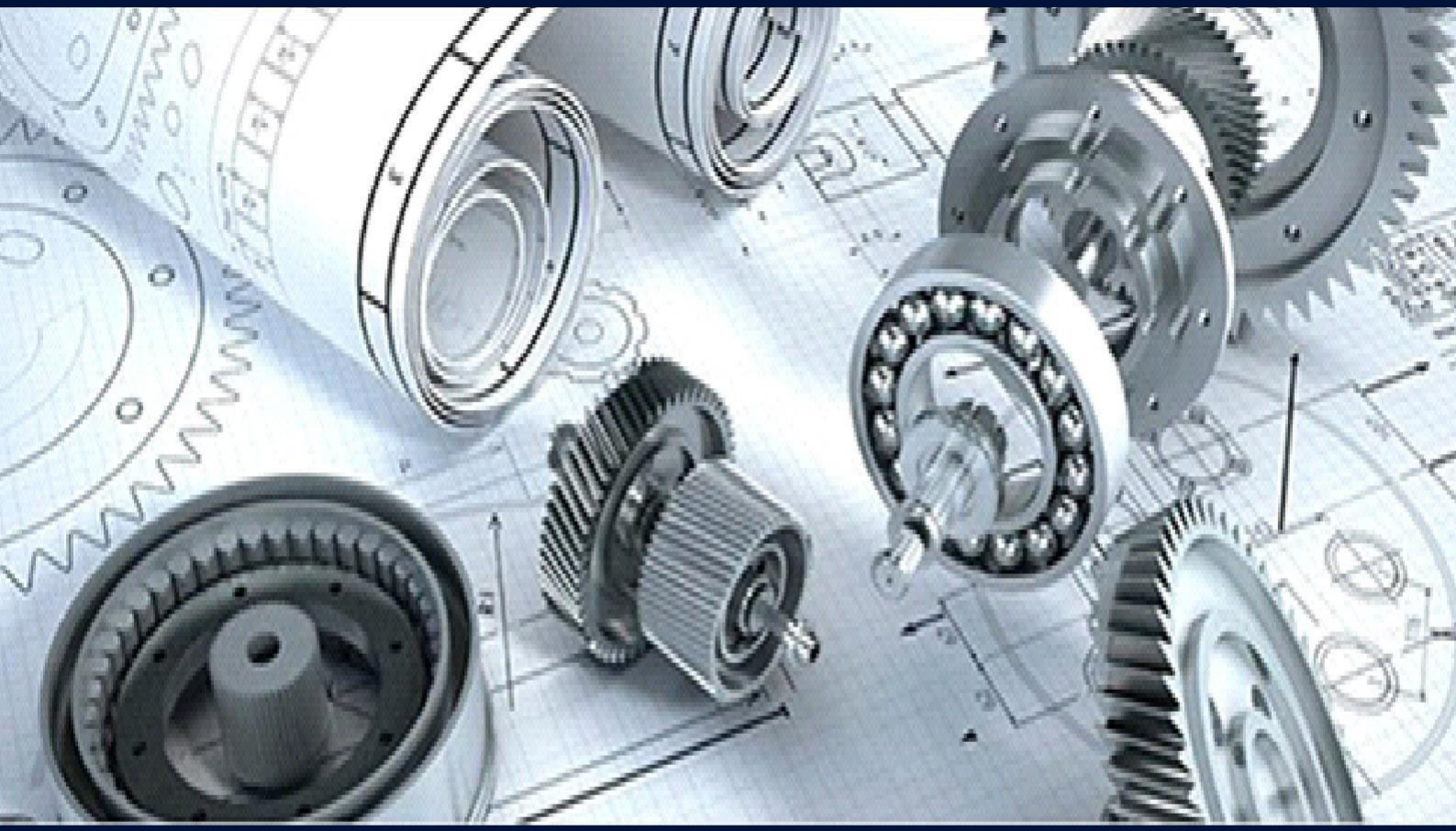

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

ISSN
INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com